प्राचीन भारतीय इतिहास में नारियों की स्थिति

बलिराम प्रसाद सिंह

साक्ष्य पुरातात्विक हो या साहित्यिक आधार नारियों की निष्पक्ष एवं सार्थक मूल्यांकन करने की जरूरत है। जब से सृष्टि का सृजन हुआ, तब से जितनी भूमिका पुरुष की रही है उतनी ही नारी की रही। जब से मानव की कहानी है प्रत्येक क्षेत्र सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक एवं धार्मिक में नारी की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। लेकिन कभी भी इसके सही रूप को सामने नहीं लाया गया। आज लोकतांत्रिक समाज में यह धारणा बनने लगी है कि नारी–पुरुष से कम नहीं है। लेकिन खुले दिल एवं दिमाग से इसको स्वीकार किया जाए तो सभ्यता और संस्कृति का और भी उन्नत रूप सामने आयेगा। साहचर्य के नियम को स्वीकारना होगा तथा महत्व को भी समझना होगा। कुछ साक्ष्यों, विद्वानों एवं पुस्तकों के आधार पर इस लेख में प्राचीन भारत में नारियों की स्थिति पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।